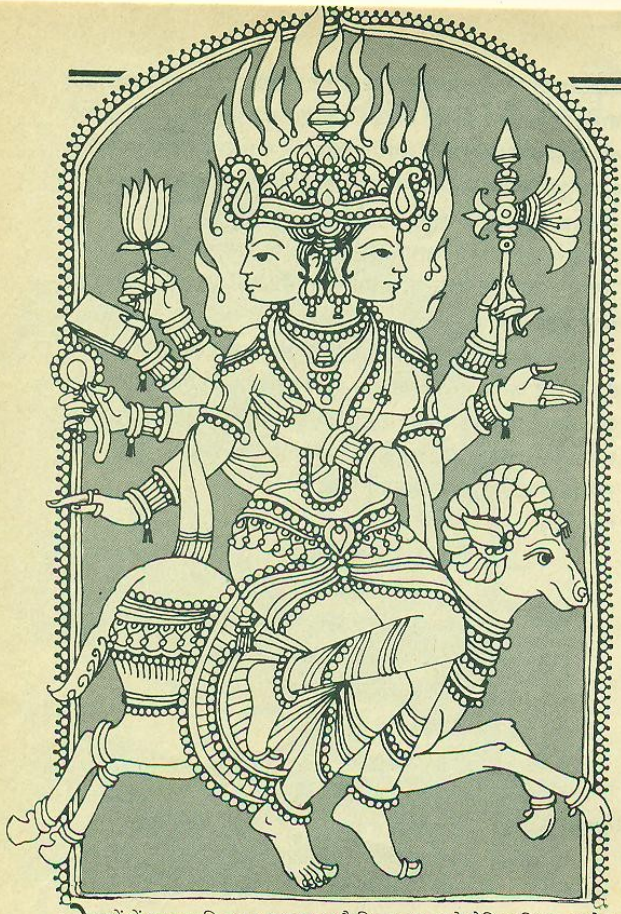

वेदों में विज्ञान

दूतम अग्नि (१)

वेदों में अनन्त विज्ञान भरा हुआ है किन्तु आज के वैदिक विद्वान और महात्माओं के प्रवचनों और उपदेशों में सिर्फ याचना परक उल्लेख ही किया जाता है। क्या इससे साधारण व्यक्ति यह नहीं समझेगा कि इन्होंने वेदों का गहन अध्ययन नहीं किया है। विद्वान और महात्माओं को भी यह ध्यान रखना चाहिये कि अगर वह वेदों की विद्याओं का उल्लेख नहीं करेंगे तो जिज्ञासू कहा से आयेंगे।

वेदों के अनन्त ज्ञान की ओर विद्वान और महात्माओं का ध्यान आकर्षित करने के लिये यहां पर 'दूतम' नामक अग्नि के कुछ वेद स्थल दे रहा हूँ जिससे यह सिद्ध होता है कि वेदों में कितना अधिक विज्ञान भरा हुआ है किन्तु विद्वानों का ध्यान न जाने से देश इस ज्ञान से वंचित है।

सामवेद के मंत्र संख्या ३ में 'अग्नि दूतम वृणीमहे' में काण्वो मेधातिथि ऋषि ने अग्नि देवता के गायत्री छन्द द्वारा इस अग्नि विज्ञान के विभिन्न सिद्धान्तों पर प्रकाश डाला है। इस प्रसंग में दूतम अग्नि को तपानेवाला पदार्थो को एक देश से दूसरे देशों को पहुचाने वाले सिद्धान्तों को दर्शाया है। आज के विज्ञान में रेडियों और टी.वी. के माध्यम द्वारा ही दृश्य तथा संवाद एक से दूसरे देश में पहुंचते हैं। इनका मूल कारण विद्युत अग्नि ही है। 'अग्निम' नाम से इसके तीनों तरह की अग्नि, विद्युत, सूर्य शक्ति का उल्लेख मिलता है। 'होतरम' शब्द से वेग आदि देनेवाले अग्नि को समन्वीयत करने के सिद्धान्त मिलते हैं। 'यज्ञस्य' शब्द से शिल्प विद्यालय यज्ञ द्वारा इस ज्ञान को सिद्ध करने का सिद्धान्त दिया है। 'सुक्रतम' नामक शब्द से उत्तम-उत्तम क्रियाओं के द्वारा सुधारने और उत्तम निर्माता बनाने के सिद्धान्त दिये हैं। 'विश्व वेदसम' शब्द द्वारा जिससे सब धनों को प्राप्त कराने वाले या कारीगरों को सब शिल्प आदि साधनों का लाभ प्राप्त होता है सिद्धान्त दिये हैं। यह प्रसंग सामवेद उत्तरार्चिक १९० से १९२ वाले त्रिक में तथा ऋग्वेद २/१२/२ से ५ वाले वर्ग में तथा अथर्ववेद २०/१०१/१ से ३ वाले सूत्र में विस्तृत किया हुआ है। त्रयी विद्या के द्वारा प्रश्न उत्तर रूप में पूर्ण विज्ञान इस प्रसंग द्वारा सिद्धान्त रूप में प्रकट हो जाना चाहिये। इस प्रसंग को ओर विस्तृत करने के लिये तैतरीय संहिता २/५/८/५ तै.ब्रा. ३/५/२/३, ऐब्रा. २०/३/२५२, द्वारा वेदों के अन्य स्थलों द्वारा जोड़ा गया प्रतीत होता है।

सामवेद १२ वे मंत्र 'दूतांतो विश्ववेदसम ' में वामदेव ऋषि ने अग्नि देवता के गायत्री छन्द द्वारा ही इस विज्ञान के दूसरे चरणों के सिद्धान्त दिये हैं। इस प्रसंग द्वारा पूर्ण तथा सिद्ध हो जाता है कि वेद पूर्णरूप में मनुष्य को भौतिक विज्ञान विद्या को देने के लिये ही उत्पन्न किये गये हैं। यह प्रसंग ऋग्वेद ४/८/१ से ८ वाले वर्ग में विस्तृत किया गया है। ले.ब्रा. २३/२/२१ द्वारा भी वेद स्थलों को एक दूसरे से जोड़ा गया है।

सामवेद पूर्वा ४५ वें मंत्र 'एना वो अग्निं' में वामदेवः वसिष्ठोवा ऋषि ने अग्नि देवता के वृहती छंद द्वारा इस विद्या विशेष के कुछ अन्य सिद्धान्त दिये हैं। यह प्रसंग सामवेद उत्तरार्चिक १४९-५० वाले त्रिक में विस्तृत है फिर इस विद्या विशेष पर ऋग्वेद १/१६/१ से ५ वाले वर्ग में अन्य सिद्धान्त दिये हैं। इस विद्या विशेष के अन्य क्रिया सिद्धान्तों पर यजुर्वेद अध्याय १५ के २० से ४८ वाले अनुवाक में परमेष्ठी ऋषि ने प्रकाश डाला है। यह प्रसंग तै.ब्रा. ४/४/४/४ द्वारा वेदों के अन्य स्थलों से जोड़ता है।

सामवेद ६४ वे मंत्र 'चित्र इच्छि शोस्तरूणस्य' में उपस्तुत ऋषि अग्नि देवता के जगती छन्द द्वारा इस विद्या विशेष के कुछ भागों के सिद्धान्तः दिये हैं। यह प्रसंग ऋग्वेद १०/११५/१ से ५ वाले वर्ग में उपस्तुत तथा ऋषि द्वारा विस्तृत किया गया है।

सामवेद ३२० वे मंत्र 'नाके सुवर्णरूप' में वेन ऋषि ने इन्द्र देवता के त्रिष्टुप छन्द द्वारा अंतरिक्ष में सूर्य मंडल के साथ गन्धर्व शत्रि के साथ होने वाले इसके अनेक सिद्धान्तों का वर्णन है। इस प्रसंग का विस्तार सामवेद उत्तरार्चिक १८४ से ४८ वाले त्रिक में तथा ऋ.१०/१२३/६ से वर्ग में किया गया है। अथर्ववेद १८/३/६६ वाले प्रसंग में इसका प्रकाश विज्ञान से सम्बन्ध किया गया है। तै.ब्रा.२/५/८/५; तै.आ. ६/३/१; ऐ.ब्रा.४/५/२२ द्वारा वेदों के अन्य स्थलों का इस विद्या विशेष के सिद्धान्तों का समन्वय कराया गया लगता है।

काण्वो मेधातिथि ऋषि ने ऋग्वेद १/१२/६ से १० वाले वर्ग में भी इसी विद्या विशेष पर प्रकाश डाला गया लगता है। तथा सामवेद ३२, तथा ८४५ वाले त्रिक में भी इसका कुछ सम्बन्ध है। ऐ.ब्रा. ३२/१/१२९ द्वारा भी इसका सम्बन्ध वेदों के अन्य स्थलों से बतलाया गया है।

घोंर काण्वः ऋषि ने अग्नि देवता के अनुष्टुप, पंक्ति और बृहती

छन्द द्वारा ऋ. १/३६/१ से ५ वाले वर्ग में दूतम अग्नि को सूर्य प्रकाश के साथ समन्वित करके पदार्थो और संवादों के लेने देने वाले सिद्धान्त दर्शाये हैं। यह प्रकरण सामवेद पूर्वाचिक ५९ द्वारा सम्बधित है।

प्रस्कण्व ऋषि ने अग्नि देवता के बृहती छन्द द्वारा वायू जल क्रियाओं द्वारा दूतम अग्नि के गुगा सिद्धान्तों का वर्णन किया है। यह प्रसंग ऋ. १/४४/१ से ५ वाले वर्ग में है। तथा इसका कुछ सम्बन्ध मा.पू.४० तथा २१८०-८२ वाले तृ-त से भी कुछ सम्बन्ध लगता है। ऋ.२/४४/२२ से २४ वाले वर्ग में दूतम नामक अग्नि के सिद्धान्तों का वर्णन है। इस प्रसंग का यजु.३३/२५ वाले अनुवाक में भी विस्तार लगता है।

ऋ.२/५८/२ में गौतमनोधा ऋषि ने अग्नि देवता के जगती, त्रिष्टुप छन्द द्वारा दूतम अग्नि को सबके चलाने वाले तथा शब्द ज्ञान के साथ के सिद्धान्त दिये हैं। ऋ.२/६०/२ से ५ वाले वर्ग में दूतम अग्नि के साथ अंतरिक्ष में रहने वाले मातरिश्वा वायू के साथ सम्बधित किया गया है।

ऋ.२/१२/६ से १० वाले वर्ग में पराषर ऋषि ने वेद विज्ञान तथा दूतम अग्नि के ज्ञान को प्राप्त करने का निर्देश अग्नि देवता के त्रिष्टुप छन्दों के माध्यम से दिया है।

राहूगर में गौतम ऋषि ने भी ऋ.१/१४/१ से ६ वाले वर्ग में अग्नि देवता के गायत्री छन्दों द्वारा दूतम अग्नि के सिद्धान्तों का वर्णन किया है। इस में दूतम अग्नि के द्वारा 'ऑहू' नामक पदार्थ सिद्धान्तों का वर्णन हैं। ऋ.१/१४/६ से ९ वाले वर्ग में भी यान समुद्रों के बीच में दूतम अग्नि के कार्यों के सिद्धान्त दिये हैं।

आंगिरस कुत्स ऋषि ने ऋ.१/१०५/१-५ वाले वर्ग में विश्वेदेवा देवता के पंक्ति और बृहती छन्द के आशय द्वारा अंतरिक्ष में कार्य करने वाले दूतम अग्नि ज्ञान विभाजक सिद्धान्तों का वर्णन किया है। इस विद्या का कुछ सम्बन्ध यजु.३३/९० वाले अनुवाक से भी है।

दीर्घतमा ऋषि ने ऋ.१/१६१/१ से वाले वर्ग में क्रमव देवता के जगती और त्रिष्टुप छन्द द्वारा भी शीघ्रगामी कलायंत्र आदि में प्रयुत्र होने वाले दूतम अग्नि समन्वय सिद्धान्त दिये हैं। यह प्रकरण ऐ. ब्रा. २८/८/११६ द्वारा वेदों के अन्य स्थलों से जोड़ता है।

अगस्त ऋषि ने इन्द्र देवता के त्रिष्टुप और बृहती छन्द द्वारा शरद ऋतु में होने वाले प्रभाव के दूतम अग्नि सिद्धान्त दिये हैं। यह प्रकरण ऐ. ब्रा.२४/१/११३ द्वारा निर्देशित है। ऋ.१/१८८/१ में भी अप्रिय देवता के अग्नि देवता के १२ रूपों में से अग्नि के साथ दूतम अग्नि का समन्वय किया है।

सोम आहुति भार्गव ऋषि ने अग्नि देवता के गायत्री इन्द्र द्वारा समाचार देने वाले दूतम अग्नि के सिद्धान्तों पर प्रकाश डाला है। यह प्रकरण ऋ. २/६/१ से ८ वाले वर्ग में है तथा यजु.१२/४३, तै.स.४/२/३/४, तथा ऐ. ब्रा.४/८/२५ द्वारा सन्दर्भित है।

गृत्समद ऋषि ने ऋ.२/९/१ से ६ वाले वर्ग में अग्नि देवता के त्रिष्टुप और पी-त छन्द द्वारा दूतम अग्नि के सिद्धान्त दिये हैं। यह प्रकरण यजु. ११/३६/२१/१५, तै.स.३/५/१/२, ४/६/५/४, ४/१/३/३/२, ४/३/३/२, द्वारा वेदों के अन्य स्थलों से जोड़ता है।

विश्वामित्र ऋषि ने ऋ.३/३/१ से ५ वाले वर्ग में वेंश्वानये अग्नि के जगती छन्द द्वारा दूतम अग्नि के अन्य कुछ सिद्धान्तों से अवगत कराया है। यह प्रकरण ऐ. ब्रा. २०/२/१५१ द्वारा वेदों के अन्य स्थलों से जुड़ा हुआ है। ऋ. ३/५/२ वाले वर्ग में भी अग्नि के ओर त्रिष्टुप छन्द द्वारा पदार्थों के साथ दूतम अग्नि के त्योंहार का सिद्धान्त दिया है। ऋ.३/९/६ से ९ वाले वर्ग में विद्युत रूप में सब जगह समाचार पहुचाने वाले सिद्धान्तों का वर्णन है। यहाँ पर छन्द बदल कर बृहती तथा हो गये हैं। यह प्रकरण ऋ.१०/५२/६; यजु.३३/१, तै.ब्रा.२/४/१२/२, द्वारा वेदों के अन्य स्थलों से जुड़ा हुआ हैं। ऋ.३/११/२ वाले वर्ग में गायत्री छन्द द्वारा दूतम अग्नि के कुछ सिद्धान्त दर्शाये है।

उत्कलिः कास्य ऋषि ने ऋ.३/११/४ वाले वर्ग में अग्नि देवता के त्रिष्टुप और छन्द द्वारा जातवेदाः नामक सम्पूर्ण उत्पन्न पदार्थों में रहने वाली अग्नि के साथ दूतम अग्नि के समन्वय सिद्धान्त दिये हैं। यह प्रकरण वेदों के अन्य स्थलों से तै.ब्रा.१/२/१/१०; ३/६/२/१; तै.३/२/११/२ द्वारा एक दूसरे से गुथा हुआ है।

विश्वामित्र ऋषि ने ऋ.३/५३/४ वाले वर्ग में इन्द्र देवता के त्रिष्टुप छन्द द्वारा मधंवन नामक विद्युत के साथ दूतम अग्नि को जोड़ने के सिद्धान्त दिये हैं अथवा विमान आदि में अग्नि स्थापन आदि में प्रयुत्त होने वाले दूतम अग्नि सिद्धान्त दिये हैं।

प्रजापति विश्वामित्र ऋषि ने ऋ.३/५४/१६ से २२ वाले वर्ग में विश्वेदेवा देवता के त्रिष्टुप छन्द द्वारा नक्षत्र ज्ञान को कार्य आने वाले दूतम अग्नि के सिद्धान्तों का वर्णन किया है। ऋ.३/५५/९ वाले वर्ग में अग्नि देवता के त्रिष्टुप छन्द द्वारा प्रकाश विज्ञान में रहने वाले दूतम आग्नि के सिद्धान्तों का वर्णन है।

वामदेव ऋषि ने ऋ.४/२/२ में अग्नि देवता के और त्रिष्टुप छन्द द्वारा जल विज्ञान के साथ दूतम अग्नि ज्ञान के सिद्धान्त दिये हैं। ऋ. ४/१/८ वाले वर्ग में भी इसी विद्या विशेष के सिद्धान्तों का वर्णन है। ऋ.४/१/४ वाले वर्ग में सूर्य विज्ञान के साथ दूतम अग्नि के सिद्धान्त दिये हैं। ४/१/८ वाले वर्ग में प्रकाश विज्ञान के साथ संदेश पहुचाने वाले सिद्धान्त दिये हैं तथा इसके माध्यम से अन्न आदि पदार्थों को भी शीघ्र प्राप्त कराने वाले सिद्धान्त दिये हैं। ऋ.४/८/१ वाले वर्ग में इस विज्ञान के और सिद्धान्त विस्तार से बतलाये गये हैंऋ.४/९/१; में भी इसी विज्ञान का विस्तार है। यह प्रकरण सामवेद २३ ऐ. ब्रा. २३/४/११२ द्वारा भी निर्देशित है। ऋ.४/३३/१ में वातजूता नामक पदार्थों के साथ दूतम अग्नि के परिवर्तन रूप का वर्णन है।

वसुधृत आत्रेय ऋषि ने ऋ.५/३/८ वाले वर्ग में अग्नि देवता के छन्द में मरण धर्म वाले पदार्थों के साथ होने वाले दूतम अग्नि सिद्धान्तों का समन्वयीकारण किया गया है। ऋ.५/८/६ वाले वर्ग में भी अग्नि देवता के जगती छन्द द्वारा इस विद्या विशेष के द्वारा अनेक विज्ञान सिद्ध करने के सिद्धान्त दिये हैं। ऋग्वेद ५/११/४ वाले वर्ग में भी अग्नि दूतम के द्वारा ग्रहण करने योग्य पदार्थों को एक देश से दूसरे देश में पदार्थों को पहुचाने वाले सिद्धान्त दिये हैं।

इस आत्रेय ऋषि ने ऋ.५/२१/३ वाले वर्ग में अग्नि देवता के उष्टिपक छन्द द्वारा ऋतस्य नामक परमाणू पदार्थों के साथ दूतम अग्नि के सिद्धान्तों का समन्वय किया गया है।

वसू यव आत्रेय ऋषिने अग्नि देवता के गायत्री छन्द द्वारा ऋ.५/२६/६ वाले वर्ग में सविता अग्नि का दूतम अग्नि के साथ समन्वय करके इसके सिद्धान्तः वर्णन किया है।

(क्रमशः)

वेदों में विज्ञान

इतम् अग्नि (२)

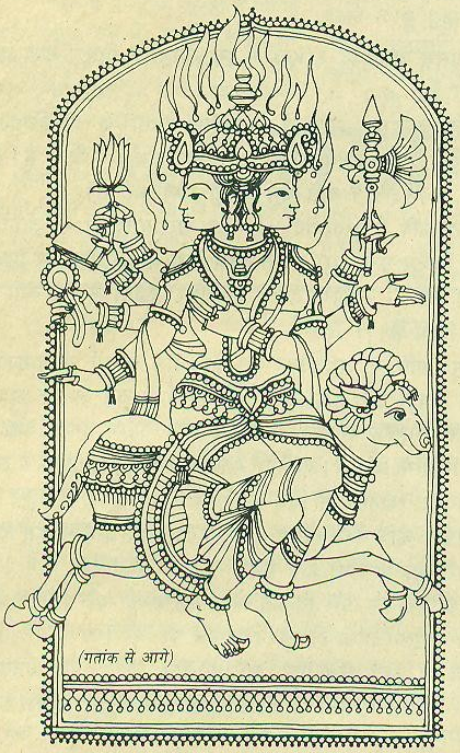

अत्रि ऋषि ने ऋ.५/४३/८ वाले वर्ग में विश्वेदेवा देवता के त्रिष्टुप छन्द द्वारा वाहनों में दूतम अग्नि प्रयुक्त करने वाले सिद्धान्त दिये हैं।

भरद्वाजो बार्हस्पत्यः ऋषि ने ऋ.६/८/४ वाले वर्ग में वेंश्वानये देवता के जगती छन्द में अंतरिक्ष में रहने वाले मातरिश्वा वायू तथा सूर्य प्रकाश के साथ दूतम अग्नि के होने वाले त्योंहार के सिद्धान्त दिये हैं। ऋ. ६/१५/९ वाले वर्ग में अंतरिक्ष और पृथ्वी के साथ होने वाले गुणा दोषों के सिद्धान्तो दिये हैं। ऋ. ६/१६/६ वाले वर्ग में अग्नि देवता के उष्टिपक छन्द द्वारा अमर्त्य पदार्थों के साथ होने वाले कर्मों के सिद्धान्त दिये हैं। ऋ.६/१६/२३ वाले वर्ग में अग्नि देवता के गायत्री छन्द द्वारा समस्त पृथ्वी में विदित पदार्थोंके साथ होने वाले दूतम अग्नि के त्यौहारों के सिद्धान्त दिये हैं। ऋ.६/५८/३ वाले वर्ग में पुष्प देवता के त्रिष्टुप छन्द द्वारा अंतरिक्ष और सूर्य द्वारा इसके पुष्टी करने वाले सिद्धान्तों का दिग्दर्शन कराया गया है। ऋ.६/६३/१ में अश्विनौ देवता के बृहती छन्द द्वारा दूतम अग्नि के नीचे की जाने वाले सिद्धान्तों का वर्णन हैं। तथा अश्विनी विज्ञान का इसके साथ समन्वय किया है।

वसिष्ठः ऋषि ने ऋ. १/२/३ वाले वर्ग में आंप्रष्ट देवता के त्रिष्टुप छन्द द्वारा सूर्य और भूमि के बीच होनेवाले दूतम अग्नि के गुणों के कर्मो के सिद्धान्त दिये हैं। ऋ.१/३/२,३ वाले वर्ग में अग्नि देवता के त्रिष्टुप और छन्द द्वारा भी अग्नि दूतम के कर्म सिद्धान्त दिये हैं। ऋ. १/१/१ वाले वर्ग में अग्नि देवता के त्रिष्टुप छन्द द्वारा दूतम अग्नि के कर्मों के सिद्धान्तः दिये हैं। ऋ. १/२०/२,५ वाले वर्ग में भी अग्नि देवता के त्रिष्टुप छन्द द्वारा दूतम अग्नि के अन्य गुण सिद्धान्तः दिये हैं। ऋ. १/११/२,३ में त्रिष्टुप और द्वारा अग्नि दूतम को फेंकने वाले अग्नि सिद्धान्तों के साथ समन्वय किया गया है। ऋ. १/१६/१,४ वाले वर्ग में अग्नि देवता के अनुष्टुप और बृहती छन्द द्वारा दूतम अग्नि के गुण कर्मों के सिद्धान्त दिये हैं। ऋ. १/३९/१ में विश्वेदेवा देवता के त्रिष्टुप छन्द द्वारा इस विद्या के विभाजक विद्वानों द्वॉरा इस विद्या में किये जाने वाले दूतम अग्नि कर्म सिद्धान्त दिये हैं। ऋ.१/६१/१ वाले वर्ग में अश्विनी देवता के त्रिष्टुप छन्द द्वारा याज्ञिक भाव से दूतम अग्नि ज्ञान के सिद्धान्त दिये हैं।

ब्रह्मा तिथि काण्वः ऋषि ने ऋ.८/५/३ वाले वर्ग में अश्विनो देवता के गायत्री छन्द में भी दूतम अग्नि के गुण कर्म सिद्धान्त दिये हैं।

सोमरिः काण्व ऋषि ने ऋ. ८/९/२१ वाले वर्ग में अग्नि देवता के उष्णिक छन्द द्वारा दूतम अग्नि को गुणों सहित अध्ययन करने का निर्देश है।

विश्वमन्राः वेंयश्वः ऋषि ने ऋ. ८/२३/६ वाले वर्ग में उष्णिक छन्द द्वारा भी दूतम अग्नि के कुछ गुण विशेष सिद्धान्त दिये हैं। ऋ. ८/२३/१९ में भी इसके कई गुण सिद्धान्तः दिये हैं। यहाँ पर मंत्र के देवता अग्नि ही हैं। ऋ. ८/२६/१६ वाले वर्ग में अश्विनो देवता के गायत्री छन्द द्वारा नरा और अश्विना द्वय को दूतः अग्नि के सहायकारी सिद्धान्त दिये हैं।

नामाकः काण्वः ऋषि ने अग्नि देवता के त्रिष्टुप छन्द द्वारा ऋ. ८/३९/३ वाले वर्ग में कक्किृतम नामक अग्नि के साथ दूतम अग्नि के गुण कर्मों का सिद्धान्त दिया है।

विरूप आङ्गिरस ऋषि ने ऋ.८/४४/३ वाले वर्ग में अग्नि देवता के गायत्री छन्द द्वारा और गुण कर्मों के सिद्धान्तः दिये हैं। ऋ.८/४४/२० वाले वर्ग में अग्नि देवता के गायत्री छन्द द्वारा ही इसके अन्य गुण कर्म सिद्धान्तों का वर्णन किया है।

जमदग्नि भार्गव ऋषि ने मित्रा वरुणो देवता के बृहती, पंक्ति, गायत्री छन्द द्वारा ऋ. ८/१०१/३ वाले वर्ग में भी दूतम अग्नि गुण कर्म समन्वय सिद्धान्त दिये हैं।

प्रयोगो भार्गव अग्निर्वा पावको बार्हस्पतः। अथवाग्नी गृहवसियणिष्ठो सहसःमुत्रौ ऋषि ने अग्नि देवता के गायत्री छन्द द्वारा दूतम अग्नि के गुण कर्मक्रिया सिद्धान्त दिये हैं।

रेमसूनू काश्यपो ऋषि ने पवमान सोम देवता के अनुष्टुप छन्द द्वारा ऋग्वेद ९/९९/५ वाले वर्ग में दूतम अग्नि द्वारा सर्वोत्पादक आदि सिद्धान्त दिये हैं।

ऋ.१०/४/२ वाले वर्ग त्रित ऋषि ने अग्नि देवता के लिये त्रिष्टुप छन्द द्वारा अग्नि दूतम विद्या के सिद्धान्तों को दर्शाया है।

त्रिशिरास्त्वाष्ट्र ऋषि ने अग्नि देवता के त्रिष्टुप छन्द द्वारा ऋ.१०/८/५-६ वाले वर्गों में ऋतस्य नामक प्रकृति परमाणू के साथ दूतम अग्नि के गुणों, कर्म सिद्धान्तों का वर्णन है।

यम ऋषि ने ऋ.१०/१४/१२-१३ वाले वर्ग में श्वानों और यमदेवता के त्रिष्टुप तथा अनुष्टुप छन्दों में सूर्य विज्ञान के साथ सिद्धान्त दिये हैं।

सप्तगू ऋषि ने इन्द्रो वैकुंठा देवता के त्रिष्टुप छन्द द्वारा ऋग्वेद

२०/४१/१ में भी दूतम अग्नि के गुण सिद्धान्तों का वर्णन है।

सुमित्रोषाध्यृश्वः ऋषि ने ऋग्वेद १०/१०/३ वाले वर्ग में आंध्र देवता की १२ तरह की अग्नि गुणों के साथ दूतम अग्नि के सिद्धान्तों का समन्वय किया है।

देवापिराष्टवेणः ऋषि ने देवा देवता के त्रिष्टुप छन्द द्वारा जल तथा सूर्य विज्ञान के साथ दूतम अग्नि के सिद्धान्त गुण दिये हैं।

पण्वोडसुरा ऋषि ने सरमा और पणय देवता के त्रिष्टुप छन्द द्वारा ऋग्वेद १०/१०८/२-४ वाले वर्ग दूती नाम से प्रश्न उत्तर रूप में भी इसी विज्ञान विशेष का ज्ञान लगता है ।

ऋषिर्जुहूब्रम्हजायोवा ब्राह्मः ने ऋ.२०/२०९/३ वाले वर्ग में विश्वेदेवा देवता के त्रिष्टूप छन्द द्वारा मातरिश्वावायू तथा सलिलम प्रामकपरम्ययू पदार्थ तत्व के साथ दूतम अग्नि के गुण कर्म क्रियायों के सिद्धान्त दिये हैं।

ऋषिनेमः प्रमेदनोंवें रूप ऋ.१०/११०/१ में सिद्धों अग्नि के साथ इन्द्र देवता के त्रिष्टुप छन्द द्वारा अग्नि दूतम के गुण, कर्म, क्रिया के सिद्धान्तों का वर्णन किया है ।

रूपस्तुतो वाष्टिर्दव्यः ऋषि ने अग्नि देवता के जगती छन्द द्वारा ऋ.१०/११५/१-५ में द्युलोक और भुलोक की जनक शक्तियों के साथ अग्नि दूतम विद्या के गुण, कर्म, क्रिया सिद्धान्त दिये हैं।

'ऋषिश्चित्रमहावसिष्ठः ऋषि ने अग्नि देवता के जगती छन्द के द्वारा ऋग्वेद १०/१२२/५-१ वाले वर्ग में भी अग्नि दूतम' के सिद्धान्त दिये हैं।

वेंनोभार्गव ऋषि ने वेनो देवता के त्रिष्टूप छन्द द्वारा ऋ.१०/१२३/६ वाले वर्ग में भी अंतरिक्ष और किरण विज्ञान के साथ दूतम अग्नि सिद्धान्तों का समन्वय किया गया है।

सप्त, ऋषयः एकर्षा ऋषि ने ऋ.१०/१३१/३ वाले वर्ग में विश्वेदेवा देवता के अनुष्टुप छन्द द्वारा वात रोगो से बचाव वाले ज्ञान विभाजक सिद्धान्त दिये हैं।

कपोतो नैऋतु ऋषि ने कपोतोपहतो प्रायश्चितः वेश्वदेवम देवता के त्रिष्टूप छन्द द्वारा ऋ.१०/१६५/१ वाले वर्ग में भी दूतम अग्नि सिद्धान्तों का वर्णन किया है।

यजुर्वेद २/१ से २/९ वाले अनुवाक परमेष्टी प्रजापति ऋषि ने अग्नि और विष्णू देवता के बृहती, और जगती छन्द द्वारा दूतम अग्नि विज्ञान द्वारा होने वाले गुण, कर्म, क्रिया सिद्धान्तों पर प्रकाश डाला है। इन्हीं ऋषि ने यजु.१५/३२/३३ वाले मंत्र के अनुवाक १५/२० से ४८ में भी अग्नियों के गुण, कर्म, क्रिया सिद्धान्तों का वर्णन किया है।

प्रजापति 'और विश्वमय ऋषि ने भी यजुर्वेद २२/१६, १३ मंत्रवाले अनुवाक में भी अग्नि के गायत्री छन्द द्वारा दूतम अग्नि के सिद्धान्तों पर प्रकाश डाला है।

जमदग्नि ऋषि ने यजुर्वेद २९/२५ से २९/३६ वाले अनुवाक तक में दूतम अग्नि विज्ञान पर विद्वान देवता के त्रिष्टुप छन्द में प्रकाश डाला है।

चातनः ऋषि ने अथर्ववेद १/१/६ में जातवेदा अग्नि के देवता मंत्र द्वारा अनुष्टुप छन्द द्वारा दूतम अग्नि के दोषों के सिद्धान्त दिये हैं।

अथर्वा सेवामोहन ऋषि ने अथर्ववेद ३/१/२ वाले प्रसङ्ग में भी मरुत देवता के त्रिष्टुप छन्द द्वारा वायू और अग्नि दूतम विद्या का समन्वय किया है। अथर्ववेद ३/२/२ में भी इसी विद्या विशेष के सिद्धान्त दिये हैं।

यही प्रसङ्ग अथर्ववेद ३/४/३ में इन्द्र देवता के त्रिष्टुप छन्द द्वारा भी वर्णित है।

शतातिः चन्द्रमाः ऋषि ने विश्वेदेवा देवता के ज्ञानविभाजक सिद्धान्तों का वर्णन अथर्ववेद ४/१३/३ वाले प्रसङ्ग में किया है। यह प्रसङ्ग ऋ.१०/१३१/१ वाले वर्ग से भी सम्बन्धित है।

अंगिरा ऋषि ने अथर्ववेद ५/१२/१ वाले प्रसङ्ग में भी जातवेदा अग्नि के त्रिष्टुप छन्द द्वारा अग्नि दूतम विद्या के सिद्धान्तों पर प्रकाश डाला है। यहाँ पर आप्रिया देवता के अग्नि विज्ञान के १२ रूपों का समन्वय किया है।

गयोभूः ऋषि ने अथर्ववेद ५/११/३ वाले सन्दर्भ में ब्रम्हजाया देवता के त्रिष्टुप छन्द द्वारा सृष्टिः के प्रारम्भ से चले आ रहे ऋतम्य तथा सलिल नामक परमाणू पदार्थों के साथ अग्नि दूतम विद्या के व्यवहार सिद्धान्त दिये हैं। यहाँ पर मातरिश्वा नामक अंतरिक्ष में रहने वाली वायू के त्योंहार भी दिये हैं।

उन्मोचनः ऋषि ने अथर्ववेद ५/३०/६ वाले प्रसङ्ग में भी इस विद्या विशेष पर कुछ सिद्धान्त दिये हैं।

भृगु ऋषि ने यम और निऋतिः देवता के जगती और त्रिष्टुप छन्द द्वारा अग्नि दूतम विद्या के कुछ सिद्धान्तों पर अथर्ववेद ६/२१/१-२ वाले सूत्र में दिये हैं। फिर इसी विज्ञान विशेष पर अथर्ववेद ६/२९/१-३ वाले प्रसङ्ग में गायत्री और अष्टिः छन्द द्वारा प्रकाश डाला गया है।

अथर्वा ऋषि ने अथर्ववेद १८/२/२१ वाले प्रसङ्ग में यम मंत्रो-ता देवता के त्रिष्टुप छन्द द्वारा पितर और मृत्यूः विज्ञान के साथ सम्बन्धितः किया है। अथर्व १८/३/६६ में भी इसी विद्या के सिद्धान्तः दिये गये हैं। अथर्ववेद १८/४/६५ में भी इसी विज्ञान विशेष पर प्रकाश डाला है।

अथर्ववेद २०/१०१/१-३ वाले प्रसङ्ग में भी मेध्यातिथि ऋषि ने अग्नि'देवता के गायत्री छन्द द्वारा दूतम अग्नि के सिद्धान्त दिये हैं। इस तरह से वेदों में मनुष्य को अपने जीवन को किस रूप में ढ़ालना है के विषय में उपदेश किया है। इस में यही लगता है कि अब तक के जो विद्वान हमको याचना परक अर्थ करके उपदेश कर रहे हैं वह खुद अभी वेद विद्या के अर्थ समझने में असमर्थ लग रहे हैं। उन्हें चाहिये कि अपने विचारों को जरा विस्तृत करें। क्योंकि मनुष्य को जीवन साधन के लिये अन्न जल प्राप्त करना आवश्यक है उसी तरह से अन्न जल को प्राप्त करने के लिये वेद विद्या भी जानना अति आवश्यक है। धन्यवाद।

सत्य की डगर

एक स्रोत फूटा चौरस नीर बहने लगा।
कल्पना को नवरूप में रच गया॥
दिल की धडकन बने नित्य नया सपना।
गंगाजल सा निर्मल वातावरण निर्मित हो गया॥
सत्य की डगर पर अडिग स्वाभिमान रहने लगा।
'वेदप्रदीप' के सम्मुख पाठक नतमस्तक रहने लगा॥

सतीश शर्मा